National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 03-01-2021; Accepted: 23-01-2021; Published: 26-02-2021
www.nationaljournals.com
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 20-22

20 वीं सदी के दो महानायक- प्रेमचंद और महात्मा गाँधी

पूनम रानी
शोधार्थी हिंदी पीएचडी, राजकीय महाविद्यालय बनबसा (चंपावत), कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

शारांश
साहित्य समाज का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। जो समाज की हर छोटी से लेकर बड़ी घटनाओं को अपने में समेटता चलता है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा जाता है। समय समय पर अनेक लोगो ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ शोषितों की आवाज को बुलंद करने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा अपनी एक अलग राह का चयन किया। उनमें से 20वीं सदी के दो प्रमुख महापुरुषों प्रथम साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद्र और दूसरा राजनीति के क्षेत्र में महात्मा गांधी का नाम सर्वोपरि है। जिस दौर में प्रेमचंद ने अपनी साहित्य यात्रा की शुरुआत की लगभग उसी समय के आसपास महात्मा गाँधी जी का आगमन भी भारतीय राजनीति में हुआ था। उस दौर में भारत की आर्थिक,सामाजिक और राजनीतिक स्थिति बहुत ही दयनीय थी। जहां एक ओर भारत के उपर औपनिवेशिक शक्ति का शासन था। वहीं दूसरी ओर पूंजीपति तथा साहूकार अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए गरीब किसानों का खून चूसने में लगे हुए थे। इन सबको समाज में व्याप्त सामजिक कुरीतियों से निजात दिलाने के लिए प्रेमचंद ने साहित्य की डोर को पकडकर अपने लेखन में समाज की हर एक कुरीतियों का चित्रण किया है। जिन समस्याओं से उस दौर का समाज गुजर रहा था। समाज को दर्पण दिखाने का जो काम प्रेमचंद ने किया, वो वाकई में काबिले तारीफ़ है। हिंदी साहित्य के इतिहास में गरीबों, पिछड़ों और दलितों के जीवन की आवाज़ को बुलंद करने का श्रेय प्रेमचंद को ही जाता है। प्रेमचंद ही वो पहले उपन्यासकार रहें है जिन्होंने हिंदी साहित्य में आज़ादी के लिए आवाज़, प्रगतिशीलता, उपनिवेशवाद का विरोध, ब्राह्मणवाद और सामंती समाज का विरोध, जातिवाद और छुआछूत का विरोध करने की परंपरा की शुरुआत की। वहीँ दूसरी ओर महात्मा गांधी जी ने सत्याग्रह और राजनीति की डोर का सहारा लेते हुए समाज में अपनी सक्रिय भूमिका अदा कि। जिस तरह गांधी जी ने सत्य, अहिंसा और इमानदारी के मार्ग में चलकर भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु सत्याग्रह करना शुरू किया। उसी तरह 'कलम का जादूगर' कहे जाने वाले प्रेमचंद्र ने गांधी जी के आदर्शों को पूरी तरह निभाया और अपने लेखन में उन सभी घटनाओं का सत्यतापूर्वक यथार्थ चित्रण किया जिन कुरीतियों से समाज का हर एक वर्ग ग्रसित था। प्रेमचन्द्र का मानना था कि जब तक साहित्य में तरक्की नहीं होगी, तब तक साहित्य,समाज और राजनीति सबके सब ज्यों के त्यों पड़े रहेंगे।

मुख्य शब्द: महात्मा गाँधी, प्रेमचंद,समाज, हिंदी साहित्य, सत्याग्रह, हिंदी उपन्यास आदि

प्रस्तावना
महात्मा गांधी और प्रेमचंद दोनों का ही व्यक्तित्व बेहद साधारण था। गरीबों, पिछड़ों और दलितों के जीवन की आवाज़ को बुलंद करने तथा उनके अधिकारों की लड़ाई में, उनका ध्यान अपनी जरूरतों की ओर कभी आकर्षित ही नहीं हुआ। 1920 में गांधी जी ने जब स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार शुरू किया और खादी से बने कपड़े पहनने का फैसला किया। इस घटना के पश्चात् गांधीजी को देखकर ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे 'विंस्टल चर्चिल' ने उन्हें 'अधनंगा फकीर' तक कह दिया था। इसी तरह हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का उनकी पत्नी के साथ फटे हुए जूते में फोटो खिंचाने पर उनकी सादगी पर एक निबन्ध की रचना तक कर दी। जिस पर उन्होंने कहा है कि, मेरी दृष्टि इस जूते पर अटक गई है। सोचता हूँ – फोटो खिंचवाने की अगर यह पोशाक है, तो पहनने की कैसी होगी? नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी – इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं है। यह जैसा है, वैसा ही फोटो में खिंच जाता है। इस घटना के पश्चात दोनों की आपस में तुलना करना उचित नहीं होगा।[1] शायद दोनों ही एक दूसरे के पूरक रहे है। जिन्होंने अपनी जरूरतों को नजरअंदाज कर शोषितों और वंचितों के अधिकारों की लड़ाई में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया। प्रेमचंद और गांधी में पश्चिमी सभ्यता, औद्योगीकरण, ईसाईकरण, अंग्रेजी साम्राज्यवाद, ग्राम्य-चेतना आदि में वैचारिक एकरूपता दिखाई देती है और प्रेमचंद कारखाने की स्थापना के विरुद्ध सूरदास द्वारा गांव की जमीन की रक्षा का संघर्ष चित्रित करते हैं जो गांधी के समान ही धर्म और नीति का सहारा लेता है।

गाँधी जी के भारतीय राजनीति में प्रवेश के काफी पहले 'प्रेमचन्द्र' ने देश की राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों को समझ लिया था। और अपनी कहानियों के माध्यम से अपने विचारों और संवेदनाओं को वाणी देने का अभियान आरम्भ कर दिया था। अपने लेखन में उन्होंने अपने विचारों के माध्यम से साफ़ जाहिर कर दिया था कि देश को औपनिवेशिक शक्ति से शासन से छुटकारा मिलना ही चाहिए। लेकिन उस वक्त सिर्फ प्रेमचन्द्र ही उस शक्ति से लड़ रहे थे। इसके लिए उन्होंने कहानियाँ लिखी।[2] अमृतराय का मानना था कि, "सन् 1901 के आसपास प्रेमचंद ने जो अपना पहला उपन्यास "श्यामा" लिखा था। उसमें उन्होंने ने बड़े सतेज, साहसपूर्ण स्वर में ब्रिटिश कुशासन की निंदा की है।" लेकिन भारतीय राजनीति में औपनिवेशिक शक्ति के खिलाफ गांधीजी का आगमन 1916 के आस-पास हुआ था। और उसके कुछ दिन पश्चात् ही गाँधी जी ने चंपारण के किसानों के साथ हो रही नाइंसाफी का विरोध करते हुए अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया। और इसका परिणाम यह हुआ कि चार महीने बाद ही चंपारण के किसानों को जबरदस्ती नील की खेती करने से हमेशा के लिए मुक्ति मिल गई। और इसी दौर में प्रेमचंद द्वारा किसानों की समस्याओं पर लिखा गया प्रथम उपन्यास 'प्रेमाश्रम' जो 1922 में प्रकाशित हुआ। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम झाँकी और भागनागत राम-राज्य की स्थापना का स्वप्न 'प्रेमाश्रम' की अपनी विशेषता है। इस उपन्यास में उन्होंने सामंती व्यवस्था के साथ किसानों के अंतर्विरोधों को केंद्र में रखकर उसकी परिधि के अंदर पड़नेवाले हर सामाजिक तबके का-ज़मींदार, ताल्लुकेदार, उनके नौकर, पुलिस, सरकारी मुलाजिम, शहरी मध्यवर्ग-और उनकी सामाजिक भूमिका का सजीव चित्रण किया गया है।"

उपनिवेशवादी शासन ने भारत की खेती के लिए एक नये तरह की समाज-व्यवस्था निर्मित की थी। उस समाज व्यवस्था को हम सभी ज़मींदारी के नाम से जानते हैं। इस्तमरारी बंदोबस्त के ज़रिये किसान और केन्द्रीय शासन के बीच जमींदार जैसी एक चीज़ पैदा हुई। ज़मींदार उपनिवेशवादी प्रभुओं के लिए भारतीय किसानों से निरन्तर उगाही की गारंटी करता था। प्रेमचन्द अपने साहित्य में किसानों के बारे में बात करते हुए, दोनों ही मोर्चों, साम्राज्यवाद-विरोध और सामन्तवाद-विरोध पर लड़ते रहे।[3]

प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों के बारे में यह बात सर्वमान्य है कि उनमें सर्वाधिक प्रमुखता से किसान-जीवन को ही विषय बनाया गया है। हिंदी आलोचना में यह बात अच्छी तरह पहचानी गयी है कि, प्रेमचंद ने अपने लेखन में किसानों के शोषण-उत्पीड़न को न केवल चित्रित किया है, बल्कि इनके विरोध की चेतना को भी पकड़ा। किसानों के विद्रोही तेवर की चर्चा रामविलासजी ने अनेक बार की है। किसानों के शोषकों की पहचान सामंतों, पुरोहितों एवं महाजनों के रूप में की गयी है। प्रेमचंद किसान की समस्या के व्यवस्थागत कारणों की तलाश करते हैं। रामविलासजी बहुत बारीकी के साथ अर्थव्यवस्था, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, सामंतवाद-पुरोहितवाद आदि व्यवस्थागत पक्षों को ध्यान में रखकर प्रेमचंद के साहित्य को समझने-समझाने का प्रयास करते हैं।[4]

प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 में हो चुका था। लेकिन उनका पहला कहानी संग्रह सोज़े-वतन नाम से आया जो 1908 में प्रकाशित हुआ। उनकी इस रचना में राष्ट्रीयता का स्वर दिखाई पड़ता है। जिस पर औपनिवेशिक सरकार ने देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत होने के कारण रोक लगा दी थी। और इस वजह से उनको अंग्रेज सरकार द्वारा भविष्य में इस तरह का लेखन न करने की चेतावनी दी गयी। इसके कारण उन्हें अपना नाम बदलकर लिखना पड़ा। 'प्रेमचंद' नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' ज़माना पत्रिका के दिसम्बर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई। उनका यह नाम दयानारायन निगम ने रखा था। कथा सम्राट के नाम से सुविख्यात प्रेमचन्द का कहना था कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। यह बात उनके साहित्य में उजागर हुई है।[5]

प्रेमचंद गांधी जी के व्यक्तित्व से कितने प्रभावित थे इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि, 1921 में जब देश में असहयोग आंदोलन चल रहा था उस समय गोरखपुर में प्रेमचंद गंभीर रूप से बीमार पड़े थे। ऐसी स्थिति हो गई कि बचने की आशा न रही। इस दौरान 8 फरवरी 1921 को महात्मा गांधी गोरखपुर आए. प्रेमचंद पत्नी और बच्चों के साथ गांधी जी का भाषण सुनने गए। और उनके आह्वान पर अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी।[6]

हिंदी साहित्य में भारतेंदु के बाद प्रेमचन्द्र ने औपनिवेशिक षड्यंत्र को समझा और इस पर चोट की। प्रेमचन्द्र की कहानियों में अत्याचार के खिलाफ सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा का ऐसा उदहारण प्रस्तुत होता है जिसका उपयोग बाद में गाँधी जी ने औपनिवेशिक शासन के विरोध में किया। अपने राष्ट्र की कल्पना करते हुए प्रेमचंद लिखते हैं, 'हम जिस राष्ट्रीयता का स्वप्न देख रहे हैं उसमें जन्मगत वर्णों की तो गंध तक न होगी, वह हमारे श्रमिकों और किसानों का साम्राज्य होगा, जिसमें न कोई ब्राह्मण होगा न हरिजन, न कायस्थ, न क्षत्रिय. उसमें सभी भारतवासी होंगे, सभी ब्राह्मण होंगे या सभी हरिजन…हमारा स्वराज केवल विदेशी जुए से अपने को मुक्त करना नहीं है, बल्कि सामाजिक जुए से भी, इस पाखंडी जुए से भी, जो विदेशी शासन से कहीं अधिक घातक है।[7]

प्रेमचन्द्र की पत्नी शिवरानी देवी ने अपनी पुस्तक 'प्रेमचंद: घर में' प्रेमचन्द्र, और गांधी जी की मुलाक़ात का वर्णन विस्तार से किया है। उन्होंने अपनी इस किताब में बताया है कि प्रेमचन्द्र गांधी जी से मिलने को इतने उत्सुक थे। उन दिनों गाँधी जी ने प्रयाग आना था। और प्रेमचन्द्र चौथे दिन की जगह दूसरे दिन ही उनसे मिलने निकल पड़े और मीटिंग खत्म होने के दो दिन बाद घर लौटकर आये। लेकिन उस दौरान गाँधी जी की लोकप्रियता और व्यस्तता के चलते प्रेमचन्द को गाँधी जी से बिना मुलाकात किये ही वापस घर लौटना पड़ा। इस पश्चात् गाँधी जी को मीटिंग के लिए वर्धा आना था। और इस बार भी वह उनसे मिलने वर्धा निकल पड़े। और इस बार उनकी पहली मुलाक़ात गाँधी जी से हुई। इस मुलाक़ात में प्रेमचन्द्र ने गाँधी जी के साथ हिंदी और हिन्दुस्तानी के विषय में मशिवरा करना था। प्रेमचंद ने अपने अनुभव के बारे में पत्नी से कहा, 'जितना मैं महात्मा जी को समझता था, उससे कहीं ज्यादा वे मुझे मिले। महात्मा जी से मिलने के बाद कोई ऐसा नहीं होगा जो बगैर उनका हुए लौट आए, या तो वे सबके हैं या वे अपनी ओर सबको खींच लेते हैं। मैं महात्मा गांधी को दुनिया में सबसे बड़ा मानता हूं। उनका उद्देश्य है कि मजदूर और काश्तकार सुखी हों, वे इन लोगों को आगे बढ़ाने के लिए आंदोलन चला रहे हैं। मैं लिखकर उनको उत्साह दे रहा हूं।' महात्मा गाँधी हिंदु-मुसलमान में एकता चाहते है, तो मैं हिंदी और उर्दू को मिला करके हिन्दुस्तानी बनाना चाहता हूँ।[8] प्रेमचन्द ने अपने एक लेख में 'स्वराज्य के फायदे' बताते हुए लिखा है कि,महात्मा गांधी देश के भक्त हैं और परमात्मा ने उन्हें भारत का उद्धार करने के लिए अवतरित किया है। इसी वर्ष के अंत में उनका 'प्रेमाश्रम' उपन्यास प्रकाशित हळ्आ जो विशुद्धत: गांधीवादी रचना है। इस उपन्यास की कहानी और पात्रों की संरचना गांधी जी के किसान, गांव, पश्चिमी सभ्यता, अंहसात्मक सुधार, हृदय- परिवर्तन, ट्रस्टीशिप के विचारों के ताने-बाने से बुने गए हैं और कथा के पात्र प्रेमशंकर एवं मायाशंकर गांधी के विचारों को ही साकार करते हैं। 'रंगभूमि' (जनवरी, 1925) का नायक अंधा भिखारी सूरदास तो गांधी का ही प्रतीक है।

जिस दौर में गाँधी जी भारतीय राजनीति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर रहे थे। उस समय सामाजिक चिंता को लेकर प्रेमचन्द्र जी ने सामाजिक चिंता के क्रम में "सेवासदन" उपन्यास का लोकापर्ण किया। उनके इस उपन्यास में उन्होंने नारी को केन्द्रित कर नारी समस्या पर अपने विचार प्रकट किए। एक समाज सुधारक के रूप में महात्मा गांधी ने भी इस समस्या को एक प्रमुख सामाजिक समस्या के रूप में देखा था जिसे वे अनैतिक और पशुवृत्ति जैसा मानते थे। प्रेमचंद भी इस उपन्यास में यही भाव लेकर चले हैं।

प्रेमचन्द्र जी ने 1925 में "रंगभूमि" उपन्यास की रचना गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन से प्रेरित होकर की थी। इस उपन्यास का मुख्य पात्रः 'सूरदास' जिसकी जमीन पर पूंजीपति जनसेवक सिगरेट का कारखाना लगाने के लिये उसे अच्छे दाम देकर इस जमीन को खरीदना चाहता है पर सूरदास इससे साफ इनकार कर देता है। वह जमीन खरीदने के तमाम प्रलोभनों से भी विचलित नहीं होता और अपने आदर्शों की रक्षा के लिये सत्याग्रह करते हुए अपने को होम कर देता है। उनके इस उपन्यास की मुख्य समस्या औद्योगिकीकरण के कारण होने वाली समस्या है। यह जो गांधीजी के लिए भी एक चिंता का विषय था, जिसके मूल में पूंजीपतियों के निजी लाभ और बाकी सब शोषण ही शोषण था। सच्चाई की यही लड़ाई सूरदास अकेले बंद आंखों और खुले दिल से लड़ता रहता है। प्रेमचन्द्र के इस "रंगभूमि" उपन्यास में इस बात का महत्व नहीं है कि सूरदास एक हारी हुई लड़ाई लड़ता है बल्कि महत्व इस बात का है कि वह अन्याय को चुपचाप सहन नहीं करता, बल्कि लड़ता है। निश्चित रूप से लेखक का आदर्श उसके उसी संघर्षमूलक आत्मबल में ध्वनित होता है जिसमें उनका पात्र हार नहीं मानता, पलायन नहीं करता बल्कि विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए शहीद हो जाता है जो उनके यथार्थ में भी आदर्श बनता है। अगर "प्रेमाश्रम" में प्रेमचंद प्रेमशंकर बनकर गांधी के सत्याग्रह की लड़ाई लड़ते हैं तो रंगभूमि में सूरदास के रूप में गांधी को ही उतार देते हैं। यही वह उपन्यास था जिसने अपनी प्रसिद्धि के चलते प्रेमचंद को कथा सम्राट की पदवी दे डाली। आगे जैसे-जैसे अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में गांधीजी का संघर्ष तेज होता गया, प्रेमचंद के उपन्यासों में भी उस विरोध के स्वर तेज होते गए। 1932 में आया उनका "कर्मभूमि" उपन्यास गांधीजी के स्वाधीनता और अछूतोद्धार आन्दोलन की कर्मभूमि का ही साहित्यिक रूप था। उपन्यास का नायक अमरकान्त बनारस के सेठ समरकान्त का बेटा है जो शुद्ध खद्दरधारी, चरखा चलाने वाला समाजसेवी है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने क्रान्ति का व्यापक चित्रण करते हुए तत्कालीन सभी राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं को कथानक से जोड़ा है।[9]

20वीं सदी के भारतीय परिवेश में महिलाओं की दयनीय स्थिति को लेकर भी गाँधी जी और प्रेमचन्द्र में समानता देखने को मिलती है। महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में महात्मा गांधी कहते है कि, "उन्हें अबला पुकारना महिलाओं की आंतरिक शक्ति को दुत्कारना है। यदि हम इतिहास पर नजर डालें तो हमें उनकी वीरता की कई मिसालें मिलेंगी। यदि महिलाएं देश की गरिमा बढ़ाने का संकल्प कर लें तो कुछ ही महीनों में वे अपनी आध्यात्मिक अनुभूति के बल पर देश का रूप बदल सकती हैं।"[10]

वहीँ दूसरी ओर प्रेमचन्द्र ने अपने लेखन के माध्यम से नारी को पुरुष के समान अधिकार देने की बात सामने रखी है। इनकी रचनाओं में नारी पात्र दीन दुखी तो है पर वह सशक्त है; वह अपने साथ हो रहे अत्याचारों के खिलाफ लड़ने में सक्षम भी है, तभी तो वे अपने कालजयी उपन्यास में उस दौर में लिखते हैं जिसकी कल्पना उस दौर में करना भी अपराध था - "जब पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं

तो वो महात्मा बन जाता है और अगर नारी में पुरुष के गुण आ जाये तो वो कुलटा बन जाती है"। 'गोदान' में उद्धृत ये पंक्तियां प्रेमचंद का नारी को देखने का संपूर्ण नज़रिया बयां करती हैं।[11]

निष्कर्ष

प्रेमचन्द्र और गाँधी जी एक सिक्के के दो पहलू रहें है। जहाँ एक ओर गांधी जी ने राजनीति और सत्याग्रह के जरिये परिवर्तन और क्रांति लाने का प्रयास किया। वहीँ दूसरी ओर 'कलम का जादूगर' कहें जाने वाले प्रेमचन्द्र ने अपनी कलम को हथियार बनाकर औपनिवेशिक ताकतों और समाजिक कुरीतियों के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की थी। गांधी जी अपने स्वराज्य आंदोलनों से जनता में स्वाधीनता एवं रामराज्य की चेतना को उत्पन्न कर रहे थे और प्रेमचंद उसमें तात्कालिक वास्तविक अनुभूतियों और संवेदनाओं से पूर्ण कथासूत्र पिरोकर अपने पाठकों को इस महायुद्ध के लिए तैयार कर रहे थे।

20वीं सदी के दौर में गांधी और प्रेमचंद का साथ-साथ चलना भारतीय समाज में एक महान उपलब्धि था। इस कारण भी प्रेमचंद, गांधी के हमराही बने हुए दिखाई देते हैं, क्योंकि वे फिर से रामराज्य की स्थापना करना चाहते हैं और राम भारतीय धर्म, संस्कृति, नीति, न्याय और सुशासन के प्रतीक हैं। गांधी के बाद हिंदी साहित्य ही नहीं, भारतीय साहित्य में ऐसा राष्ट्रीय-मानवीय संघर्ष एवं उत्कर्ष दिखाई नहीं देता तो इसका शायद यही कारण है कि कि उसके बाद कोई गांधी पैदा नहीं हुआ और इस कारण कोई प्रेमचंद भी नहीं बन पाया।[12]

संदर्भ

1. http://www.hindikahani.hindi-kavita.com/Premchand-Ke-Phate-Joote-Harishankar-Parsai.php
2. गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2008, पेज – 703 https://samkaleenjanmat.in/premchand-aur-kisan-sankat
3. https://www.forwardpress.in/2016/12/premchand-ke-kisan-pichhadi-jatiya-aur-bhartiy-sanskriti/
4. https://m.dailyhunt.in/news/india/hindi/gs+junction-epaper-jun/munshi+premachand
5. शिवरानी देवी प्रेमचन्द्र 'प्रेमचन्द्र घर में, सरस्वती प्रेस बनारस, पेज 68
6. https://hindi.theprint.in/culture/premchand-birth-anniversary-hindi-literature-sahitya
7. शिवरानी देवी प्रेमचन्द्र 'प्रेमचन्द्र घर में, सरस्वती प्रेस बनारस, पेज 127
8. https://zenodo.org/record/2653833#.YB1-QOgzbIU
9. https://www.pravakta.com/womens-rights-and-gandhian-thought
10. https://www.gaonconnection.com/samvad/special-on-munshi-premchands
11. https://www.jagran.com/news/national-time-for-a-great-achievement-in-hindi-literature-walking-together-with-gandhi-and-premchand